उपशास्त्रीय संगीत शैली ''टप्पा''
(श्रृंगार व भाव पूर्ण गायकी)

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल, संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

टप्पा एक चंचल चपल एवं श्रृंगार से परिपूर्ण गायन की उप–शास्त्रीय शैली है। "टप्पा भारत की प्रमुख पारंपरिक संगीत गायन शैलियों में से एक है। टप्पा हिंदी मिश्रित पँजाबी भाषा का श्रृंगार प्रधान गीत है। यह गायन शैली चंचलता व लच्छेदार तान से युक्त होती है। "यह माना जाता है,की इस शैली की उत्पत्ति पंजाब व सिंध प्रांतों के ऊँट चलाने वालों द्वारा की गई थी। इन गीतों में मूल रूप से हीर और रांझा के प्रेम व विरह प्रसंगो को दर्शाया जाता है। खमाज, भैरवी, काफी, तिलांग, झिन्झोटि, सिंधुरा और देश जैसे रागों तथा पंजाबी, पश्तो जैसे तालों द्वारा प्रेम–प्रसंग अथवा करुणा भाव व्यक्त किए जाते हैं।टप्पा की विशेषता है, इसमें लिए जाने वाले ऊर्जावान तान और असमान लयबद्ध लहजे ।[1]

टप्पा के लिए 'टपार शब्द भी देखने को मिलता है।प्रमुखत: यह शैली उपशाश्त्रीय संगीत के अंतर्गत आता है, इसके विषय में कुछ अन्य मत है ,एक इस प्रकार है– "बघेली शब्द कोष में एक शब्द– टपार आता है। टपार का अर्थ बिरल–बिरल बोये गये अनाज के पेड़ों में प्रयुक्त होता है। कमोबेश यही अंतराल टप्पा के हर गीत के बीच दूसरे गीत के गाये जाने के पहले होता है। हो सकता है यही इसके टप्पा नाम का कारण बना हो"। [2]

उपशास्त्रीय संगीत गायन के अन्तर्गत टप्पा गायन आता है। यह गायन पहले पंजाब में अधिक गाया जाता था। यह एक चंचल–चपल एवं शृंगार रस युक्त गायकी है। ''18वीं शताब्दी में लखनऊ के नवाब आसफउदौला के समय प्रसिद्ध गायक तथा कव्वाल ''गुलामनबी'' उर्फ ''शैरी मियाँ'' ने इसका प्रचार किया था। कुछ लोगों का कथन है कि प्राचीन 'बेसरा'' नामक गीति के आधार पर 'टप्पा' गायन की उत्पत्ति हुई। [3]

''टप्पा गायन के लिए गले का रियाज से पूर्ण होना अतिआवश्यक है क्योंकि टप्पे में हरकत अधिक होती है छोटी–छोटी ताने खटके मुर्कियों का काम होता है।

''ख्यालों के बाद यह गाना प्रचलित हुआ। 'टप्पा' भी हर राग–रागिनी में बँधे रहते हैं। आजकल टप्पा का गायन बनारस को छोड़ अन्य स्थानों में बहुत कम रह गया है।। [4]

टप्पे के आविष्कार के सम्बन्ध में ''कैप्टन विलर्ड'' कहते हैं–''
"Songs of this species are the admiration of Hindustan. It has been brought to its present degree of perfection by the famous shouree, who in some measure may be considered its founder."[5]

टप्पा गाने का ढंग ख्याल से बहुत निराला है। इसकी गति अत्यन्त चपल होती है। इसकी ताने दानेदार व बहुत तैयार लय में गाई जाती है। टप्पे की ताने छोटे–छोटे टुकड़ों से बनी होती हैं। ''टप्पे में मुर्की, जमजमा, आंस आदि का भी प्रयोग होता है। कुछ लोग इसे क्षुद्र प्रकृति की गायकी मानते हैं, किन्तु ऐसा सोचना गलत है। हरेक गायन शैली अपने अपने स्थान पर ठीक है।[6]

''टप्पा गायन शैली के लिए ''टप्पे के तान'' का प्रयोग भी देखने मिलता हैं । ''टप्पे का ठेका'' जिसे पंजाबी ताल, भी कहा जाता है, टप्पा तान तीव्र गति में लेते है जो उसमे अद्‌भुत रस को उत्त्पन्न करती है ।टप्पा गायन में ताल ''कहरवा'' इत्यादि का प्रयोग होता है। तथा जयजवन्ती, खमाज, बरवा, झिंझाोटी, पीलू मांड, विहाग, काफी, भैरवी इत्यादि रागों में गाई जाती है। तथा गायकी कुछ प्रमुख घराने भी है जो इस प्रकार हैं बनारस, ग्वालियर, विष्णुपुर, गया इत्यादि। "टप्पों को एकाएक प्रस्तुत करने हेतु नियमानुसार पहले आलाप को ठुमरी अंग में गाया जाता है तथा उसके पश्चात तेजी से असमान लयबद्ध लहजे में बुने शब्दों के उपयोग से तान की ओर बढ़ा जाता है। टप्पा गायकी में जमजमा, गीतकारी, खटका, मुरकी जैसे कई अलंकार प्रयोग में लाए जाते हैं। यह शैली मूलतः ग्वालियर घराने तथा बनारस घराने की विशेषता है। दोनो घरानों के टप्पों में ताल और आशु रचना की शैली का उपयोग जैसे कुछ संरचनात्मक मतभेद हैं, लेकिन मौलिक सिद्धांत एक जैसे ही हैं" ।[7]

टप्पा के सुप्रसिद्ध गायकों में है। 'गिरिजा देवी, उ0 निसार हुसैन खाँ, एल के पंडित, सिद्धेश्वरी देवी, राजन–साजन मिश्र, निहार रंजन बनर्जी रसूलन बाई, तानरस खाँ, हुसैन बख्श इत्यादि। यदि हम निम्नलिखित पंक्ति को देखे तो यदि पहली पंक्ति समस्या करती है, तो दूसरी उसका समाधान करती है, उदाहरणार्थ –

yëk d /kkrh fdukjh ufg vk;A
fcuk cky crku fpUgkjh ufg vk;AA

टप्पा की बंदिशों के कुछ निम्नलिखित उदाहरण जिन्हें भिन्न–भिन्न रागों में पिरोया गया है ,उदाहरण स्वरुप राग भैरवी,राग खमाज

,राग काफी ,राग झिझोटी–

VIik&f

jkx: Hkjoh
rky: VIi dk rky
y;: æ|r
Lojc): d|ekj x/ko

cfn'k:

tkuokyk o lk.kko] ejk lkFk fuHkkb,
eu Hkh y py uky lkuk o AA
r|> tgu eku dkb ugh viuk eMk
lk.kk fdlu l|uko lkn gky lk.kk o AA

VIik&„

jkx: f>>kVh rky: VIi dk rky
y;: e/;
Lojc): fouk;d jko iVo/ku

बंदिश:

vtkutk tkn xjo fny eMk
/kMdnk cUnhnk fny Qknk A
g|.k r|u tk.knh 'kkjh r|rk Qknh e
b'kd dk Qknk dgj dhV cUnhnk fny QknkA[8]

VIik&…

jkx: f>>kVh
rky: VIi dk rky
y;: e/;

cfn'k:

redh djkfuo , jcnk
e NfM;k NM fx;k A
ftufn uky okjho ckykiu [kyko
fe;k lk lku yjx;k vko AA

VIik&†

jkx: f>>kVh
rky: VIi dk rky
y;: e/;

cfn'k:

l|u ekb oky;k e rkMokyk A
fcu nhBk okfjo cdy j|uk
fe;k e rku| l;kj djk ft;k AA

VIik&‡

jkx: dkQh
rky: VIi dk rky
y;: e/;

cfn'k:

ln g tkuh ;kjc , fe;k| A
nkuk rjQ l g ef'dy ;k jc rjh n|gkb g
uk
rkc oLy nkje ukrkdrh t|nkb AA

VIik&ˆ

jkx: [kekt
rky: VIi dk rky
y;: æ|r
Lojc): d|ekj xU/ko

cfn'k:

स्थायी :

vk fnynkjk vktk j
Fkkjh l|jr fn[kktk j
ud utkj fQjk n j AA

vrjk:

cnjk dh #r vkb j fi;k
ft; MjiV g vc| cjlu ykx uuk j AA

VIik&‰

jkx: [kekt
rky: VIi dk rky
y;: foyfcr

VIik&Š

jkx: [kekt
rky: VIi dk rky
y;: foyfcr

cfn'k:

चटदे चटक आइये ऐसी जालम इ जटी जोरा जरी ।
मलकता दिलनु शोरी नु झलकदे गम्या नजर दिया नखट दे।।

VIik&‹

jkx: [kekt
rky: VIi dk rky
y;: foyfcr

cfn'k:

okjh tUnh e rk rj 'kuk e rk
v[kMh [kVdnh jnh fny Hkh HkVdnk jnk
gene e y[kk[k okjh Qjh Qjh AA

VIik&få

jkx: [kekt
rky: VIi dk rky
y;: foyfcr
Lojc): jkekJ; >k Þjkejxß

cfn'k:

ckojk r dj dkg vj uknku A
lkp fopkj dj uk dcg| eu
^jkejx* lc fnu gko uk lkeku AA

VIik&‹

राग: सिंधूरा
ताल: चाचर
लय: मध्य
स्वरबद्ध: कुमार गन्धर्व
बंदिश:

LFkk;h :

मीठा बोला हाम सब आजे दिन
गल मिल गल लग जाना भावे

vrjk:

,lk gk eukoa fi;k j
xko ctko Hkko fny Hkjko AA

Vlik:&f0

jkx: ;eu
rky: ,d rky
y;: foyfcr

cfn'k:

LFkk;h :

;kj nk eu fur nk fugkjk
l;k fu eu Hkko nk fugkjk

vrjk:

fdroy etu o fdr oky ddk
b'd i;k fe;k tkjk fugkjkA9

cfn'k:

pky iNkuh ge ne R;t
utkjnk tkuh eh;k e rkjk A
luuk iko ukn gel rjk
n'eku rek tcl yo
viuk rk gok dke rek eh;k e rkjh AA

fu"dr

उपरोक्त विवेचना के आधार पर यह अवश्य ही कहा जा सकता है ,की यह उप–शास्त्रीय गायन शैली बहुत चंचल, भावपूर्ण एवं श्रृंगार रस से परिपूर्ण है ,जो की श्रोतागणों को रससिक्त करने में पूर्णतया समर्थ है।

संदर्भ ग्रंथ

1.http://bharatdiscovery.org/india/
2.http://www.deshbandhu.co.in/newsdetail/4987/3/52
3.ख्याल गायन शैली : विकसित आयाम– सत्यवती शर्मा पृ0 76
4.संगीत सागर– प्रभुलाल गर्ग –पृष्ठ–105
5.''भारतीय संगीत का इतिहास– उमेश जोशी पृ0 351
6.भारतीय संगीत का इतिहास–उमेश जोशी–पृ0–35
7.http://podcast.hindyugm.com/2011/07/blog-post_10.html
8.राग विज्ञान भाग ३ , पंडित विनायक राव जी पटवर्धन
9.क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ , पंडित विष्णु नारायण भातखंडे , पृष्ठ ५२